फरीदाबाद
मजदूर समाचार
अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

व्हाट्सएप के जरिये भी अपनी बातें हम तक पहुँचा कर चर्चा का दायरा बढायें। मजदूर समाचार फोन पर पायें और अपने ग्रुपों में भेज कर आदान-प्रदान बढायें। हमारे इस नम्बर पर व्हाट्सएप मैसेज भेजें : 9643246782

नई सीरीज नम्बर 373 जुलाई 2019

अतुलनीय कनफ्युजन

वीडियो देखा ?

कौनसा वीडियो ? तूने जो भेजा था यह लिख कर कि '' तेरे कनफ्युजन को बढाने के लिये ।''

हा-हा ! तेरा कार्यस्थल कुछ ऐसा ही होता जा रहा है ना ?

हाँ, ऐसा ही कुछ लग रहा है। लेकिन वीडियो वाला कार्यस्थल कुछ ज्यादा ही निपुणता और बारीकी लिये था।

अरे दिखा तो दो किस की बात कर रहे हो।

अच्छा ये देख। भेज रहा हूँ तुझे। मैं जल्दी से बता देता हूँ कि यह एक PCB बोर्ड बनाने वाली फैक्ट्री का वीडियो है। खूबी यह है कि अति निपुणता तथा अति शीघ्रता से एक PCB की हजारों प्रतियाँ बना सकते हैं और उसी सहजता से किसी द्वारा शोध किये का एक PCB नमूना बना सकते हैं।

राजु मुझे बोलता रहता है अपने बनाये सर्किटों के बारे में। कुछ डिजाइन भी दिखाता रहता है। बोलूँ उसे कि डिजाइन भेज और तेरा सर्किट बोर्ड आ जायेगा। ऐसा है क्या ?

कुछ ऐसा लग रहा है। कहीं से भी डिजाइन भेजो, वो बना कर, टैस्ट करके भेजते हैं।

तो फिर कनफ्युजन किस बात की है ?

मुझे जो लगता है वो यह है कि हम सब फैक्ट्रियों में, वर्कशॉपों में काम करने वाले प्रोडक्शन करने के साथ-साथ तकनीक और तकनीकी वस्तुओं पर शोध करते रहते हैं। खेलते रहते हैं। यह सब करते हैं। बरसों से।

यह बात तो सही है। ऑटोपिन झुग्गी तो खुद ही बनाई हैं। शहर ऐसे ही बने हैं।

हाँ यार। ऐसे ही तो करते हैं। हजारों में वीडियो बना-बना कर घुमा रहे हैं। अपने में कर रहे हैं। मिल कर कर रहे हैं। एक-दूसरे से सीख रहे हैं।

फिर तो राजु के दिन आ गये। राजु की तकनीकी फेर-बदल सब को दिखेगी। हम खुश। राजु खुश। कनफ्युजन क्यों?

जिस भाषा में काम को जानते-पहचानते हैं वो कहीं लड़खड़ा रही है। यह बात तो बार-बार हमारे बीच आ रही है। रोबोट, आरटिफिशियल इन्टेलिजेन्स, कृत्रिम बुद्धि चारों तरफ बढ रहे हैं।

काम ही कनफ्युज्ड हो रहा है।

और इस माहौल में हर कोई राजु भी है।

एकदम। मानी बात। जिस तरह से दुनिया हम सब द्वारा बुनी चली जा रही है उसकी समझ शायद हमारे बीच आज अतुलनीय है।

ऐसे में दो प्रकार के कनफ्युजन होते हैं। एक उल्लासमय कनफ्युजन।

एक अचम्भेवाला कनफ्युजन।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद - 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

असंगत बन गये है

★ओरियन लैदर (90 तथा 101 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्रियों में एक हजार मजदूरों की शिफ्ट सुबह साढे नौ बजे आरम्भ होती है। एक रोज रात को सवा ग्यारह बजे तक और दूसरे रोज रात सवा तीन बजे तक काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 30-35 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से।

★महावीर डाई कास्टिंग (114 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में सुबह 7 बजे फैक्ट्री में प्रवेश का समय निश्चित है, निकास का समय निर्धारित नहीं है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

★ओरियन्ट क्राफ्ट (बी-16 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूर काम करते हैं हालाँकि यहाँ ऑफिस दिखाते हैं , प्रोडक्शन बन्द दिखाते हैं। सब वरकरों को ठेकेदार बी सोल्युशन कम्पनी के दिखाते हैं, लाल कुँआ में काम करते दिखाते हैं। दिल्ली में लागू न्यूनतम वेतन देना दिखाते हैं जबकि 8 घण्टे की बजाय 11 घण्टे ड्युटी पर यह न्यूनतम वेतन देते हैं। सुबह साढे नौ बजे काम आरम्भ होता है और रात साढे आठ बजे तक किये काम को आठ घण्टे का कहते हैं। रात साढे आठ बजे बाद वाले समय को ओवर टाइम कहते हैं। फैक्ट्री में रात साढे दस, रात एक, रात दो बजे तक काम। जिसे ओवर टाइम कहते हैं उसका भुगतान भी दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से।

★जय स्विच (407 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव) फैक्ट्री में काम करते 300 मजदूरों में से दस वरकर ही परमानेन्ट। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। अप्रैल तक ओवर टाइम के पैसे बैंक खातों में भेजते थे। मई के ओवर टाइम के पैसे 26 जून से नगद देने शुरू किये हैं। फैक्ट्री में पीने के पानी की भारी दिक्कत।

★विनय ऑटो (42 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 600 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में। ओवर टाइम के 100 घण्टे हैं तो 50 दिखाते हैं। सिंगल रेट से भुगतान को दुगुनी दर से दिया दिखाते हैं। कैन्टीन है। दो-तीन तरह की चाय, दो-तीन तरह का भोजन। वरकरों के लिये बहुत घटिया। मोल्डिंग विभाग में बहुत गर्मी और डिपार्ट में एक भी पँखा नहीं।

★युनाइटेड पॉली इंजीनियरिंग (डी-13/3 ओखला फेज-2, दिल्ली) फैक्ट्री में स्टील के सर्जीकल औजार बनाते मजदूरों में कई कम्पनी रोल पर वरकरों की तनखा 8-10 हजार रुपये रही सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी। इधर मार्च से उनकी तनखा 14,000 रुपये की है। नवम्बर 2018 से देय एरियर नहीं दिया है। और जिनकी तनखा 14-15-16 हजार रुपये थी उनका एक पैसा नहीं बढाया। फैक्ट्री में 35-40 मजदूर वो भी हैं जिनकी ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं, और तनखा 7500 रुपये।

★यूनिवर्सल ट्रेडिंग (365 सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में कैरी बैग बनाते 40 मजदूरों की ई एस आई नहीं, पी एफ नहीं। इन वरकरों को 8 घण्टे रोज काम पर 30 दिन के 4500-6500-7000 रुपये। रोज 2 घण्टे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। यहाँ प्रिन्टिंग प्रैस वाले 10 मजदूरों की ई एस आई है।

★सबीना एक्सपोर्ट (बी-134 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में पुरुष हैल्परों की तनखा 7-8 हजार और महिला हैल्परों की 6-7 हजार रुपये। सुबह 9 से रात साढे आठ तक रोज काम। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। करीब 300 मजदूरों में दस-बीस बहुत पुरानों की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। टेलरों में कुछ की ई एस आई है लेकिन पी एफ किसी की नहीं।

★रुप पोलीमर्स (30 सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में मारुति, होण्डा बाइक, सुजुकी के रबड़ के पार्ट्स बनाते हैं। खड़े-खड़े काम करना। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 34-35 रुपये प्रतिघण्टा। उपस्थिति भत्ते में दुभान्त : ऑपरेटरों को 500 रुपये प्रेजेन्टी के और हैल्परों को 100 रुपये। कैन्टीन में वरकरों का भोजन बहुत बेकार। स्टाफ के 100 लोगों का खाना थोड़ा ठीक।

★अल्पना वार्निश (बी-149 ओखला फेज-1, दिल्ली) फैक्ट्री में 50 मजदूरों में से 15 की ही ई एस आई तथा पी एफ हैं। हैल्परों को 12 घण्टे प्रतिदिन काम पर महीने के 9000 रुपये। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, नगद पैसे, किसी को सवा की दर से और किसी को डेढ की दर से।

★एमपरसेंड डिजाइन (159 सैक्टर-8, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में चमड़े की बैल्ट, वालेट बनाते मजदूरों की एस एल छुट्टी बन्द कर दी। मैनेजमेन्ट कहती है कि सरकार ने बन्द कर दी है । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से, 42 रुपये प्रतिघण्टा।

चालाक बुद्धि

★लिबरल ट्रेडर्स (बी-84/1 ओखला फेज-2, दिल्ली) में काम करते 40 वरकरों की ई एस आई तथा पी एफ राशि 14000 रुपये तनखा पर काटते हैं। तनखा बैंक में भेजते हैं। कागज कानून अनुसार तैयार। और .... और प्रत्येक मजदूर से 1000-2000 रुपये एडवान्स दिये पर हस्ताक्षर करवाते हैं जबकि एडवान्स में एक पैसा नहीं देते। यह सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद नवम्बर 2018 से कर रहे हैं। वास्तव में वरकरों की तनखा 10-11-12 हजार रुपये है।

क्रूर बुद्धि

★रोहन आई एन सी (154 ए सैक्टर-7, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री इस अप्रैल में शुरू हुई है। हैल्पर की तनखा 8500 रुपये लगाई जबकि हरियाणा में निर्धारित न्यूनतम 8827 रुपये। एच आर में एक नई मैडम आई हैं और उन्होंने मई से हैल्परों की तनखा 8000 रुपये कर दी है। फैक्ट्री में 150 वरकर हैं जिनमें 80-90 टेलर पीस रेट पर हैं। ई एस आई तथा पी एफ किसी मजदूर की नहीं हैं। तनखा बैंक में नहीं, नगद देते हैं। सुबह साढे नौ बजे से रात 8 बजे तक रोज काम और जून में 27 तारीख तक ही रात एक बजे तक काम वाली 12 नाइट लग चुकी हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 26 की बजाय तनखा को 30-31 से भाग कर रेट कम करते हैं।

और बातें यह भी

★एस आई एस कैश सर्विसेज (बी-26 ओखला फेज-2, दिल्ली) गनमैन , कस्टोडियन, ड्राइवर को ई एस आई तथा पी एफ राशि काट कर 8 घण्टे की बजाय 9 घण्टे प्रतिदिन ड्युटी पर 26 दिन के 13,700 रुपये कम्पनी रोल पर जो हैं उन्हें और 14,000 रुपये ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखों को। साँय 5 बजे बाद की ड्युटी को कम्पनी ओवर टाइम कहती है पर भुगतान सिंगल रेट से, 50 रुपये प्रतिघण्टा। महीने में 80-100 घण्टे ओवर टाइम के हो जाते हैं परन्तु 60-70 घण्टे के ही पैसे देते हैं।

★ऋचा एण्ड कम्पनी (239 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव) फैक्ट्री में अगर स्टाफ का कोई रीजॉइनिंग करता है **(बाकी पेज तीन पर)**

ई एस आई

★नोएडा से व्हाट्सएप पर एक मजदूर : कम्पनियों द्वारा जो ई एस आई काटी जाती है उसका गरीब आदमी को कुछ भी फायदा नहीं मिल पा रहा है। 8000 की नौकरी करने वाला यदि ई एस आई में जाता है तो 200-300 आदमियों की लम्बी लाइन में लगता है। लाइन में पूरा दिन व्यतीत करता है तब जा कर उसका नम्बर आता है। नम्बर आने के बाद भी यदि ज्यादा पीड़ित है तो कुछ कार्रवाई होती है वरना गोलियाँ दे कर 10 दिन बाद आना या 15 दिन बाद आना। इन दिनों के बीच यदि ज्यादा सीरियस हालत होती है तो कुछ हो सकता है नहीं तो ई एस आई कुछ भी नहीं करेगी।

वहीं 15,000 की नौकरी करने वालों को, सालाना दो लाख या चार लाख मिलने वालों को ई एस आई में कभी कुछ मिल जाता है परन्तु इससे कम सैलरी वालों को सिर्फ धक्के खाने होते हैं।

4 महीने या 6 महीने तक दवाइयाँ खाओ वरना मर जाओ। इतनी बुरी हालत है ई एस आई की। हमारा ही पैसा काटा जाता है ई एस आई में हमें फिर भी सर्विस नहीं मिलती।

कुछ विस्तार से

✶ **डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज** (251 तथा 275 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्रियों में काम करते 1200 मजदूरों में 400 परमानेन्ट, चार ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 600, और 300 ट्रेनी हैं। उत्पादन का अधिकतर काम टेम्परेरी वरकर तथा ट्रेनी करते हैं। फरवरी 2018 की बात है। मैनेजमेन्ट ने ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे मजदूरों तथा ट्रेनी वरकरों द्वारा फैक्ट्री में फोन ले जाने पर रोक लगा दी। सुबह की शिफ्ट में ड्युटी के लिये पहुँचे सब टेम्परेरी वरकर तथा ट्रेनी फैक्ट्री गेटों के बाहर रहे। दो घण्टे में मैनेजमेन्ट ने कहा : फोन अन्दर ले जा सकते हो। दोनों फैक्ट्रियों के टेम्परेरी वरकर 2016 में उत्पादन बन्द कर फैक्ट्री गेटों के बाहर निकले थे। वैसे, छोटी-छोटी बात पर टेम्परेरी वरकर निकाल दिये जाते हैं।

क्वालिटी मानदण्डों अनुसार 2016 में उत्पादन 35-36 हजार था। उसके बाद से अन्धाधुन्ध उत्पादन, 60-70 हजार। पूरा जोर प्रोडक्शन पर। क्वालिटी जीरो। कई की टैस्टिंग नहीं, बाइपास होती हैं। सफाई में बहुत ज्यादा ढील। इजराइल, अमरीका, जर्मनी, फ्रान्स, होलैण्ड, स्लोवेकिया.. वैश्विक कम्पनी है। इधर मई से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम।

कहने को ट्रेनी लेकिन कम्पनी प्रशिक्षण नहीं देती। दो ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं और ट्रेनी से पूरा प्रोडक्शन लेते हैं। दो प्रकार के ट्रेनी बताते हैं : एक साल वाले और दो वर्ष वाले। परन्तु एक वर्ष वालों का साल पूरा होने पर दो वर्ष कर देते हैं। दो साल वालों का तीन वर्ष कर देते हैं और तीन वर्ष होने पर चार साल कर देते हैं। कहते हैं कि ट्रेनी की हफ्ते में एक घण्टे अँग्रेजी और गणित की क्लास होगी, लेकिन कोई क्लास नहीं — प्रोडक्शन लेना है, उत्पादन में लगे रहो।

उत्पादन बढाने के लिये कम्पनी ने मासिक प्रोडक्शन बोनस आरम्भ किया : परमानेन्ट को 2000 रुपये और टेम्परेरी तथा ट्रेनी को 1000 रुपये। मैनेजमेन्ट ने कहा था कि यह हर वर्ष बढेगा और जो परमानेन्ट को मिलेगा उसका आधा टेम्परेरी तथा ट्रेनी को देंगे। परन्तु परमानेन्ट को 2800 रुपये और फिर 3400 रुपये करने के बाद भी बाकी वरकरों को प्रोडक्शन बोनस 1000 रुपये ही। इधर जुलाई से परमानेन्ट का प्रोडक्शन बोनस 4000 रुपये करने की बात लेकिन टेम्परेरी तथा ट्रेनी का कोई जिक्र नहीं। हाँ, माल रिजेक्ट हो कर वापस आने पर उस महीने का पूरा प्रोडक्शन बोनस कम्पनी काट लेती है।

डिगानिया मेडिकल डिवाइसेज में दुभान्त की सीमा नहीं। दिवाली 2018 पर परमानेन्ट मजदूरों को बोनस में दस हजार रुपये ही दिये, संग में 2250 रुपये का उपहार। टेम्परेरी वरकरों तथा ट्रेनी को बोनस नहीं, गिफ्ट नहीं, मिठाई का डिब्बा भी नहीं।

कैन्टीन में भोजन बहुत-ही खराब है। हाँ, मेडिकल कम्पनी में जरूरी बताते हैं इसलिये हर सोमवार-बुधवार-शुक्रवार को दाढी बना कर आने के लिये प्रत्येक मजदूर को 353 रुपये महीना कम्पनी देती है।

✶ 14 फैक्ट्रियों वाले **ए एस के** समूह की **ए ए ए ऑटोटेक** (157-158 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में एक हजार मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में होण्डा, हीरो, सुजुकी, बजाज, यामाहा, टी वी एस, मारुति सुजुकी, महिन्द्रा, फोर्ड, मैग्नेटो मारेली, डेन्सो के लिये अल्युमिनियम डाई कास्टिंग कम्पोनेन्ट बनाते हैं। कम्पनी रोल पर जो 300 वरकर हैं उन्हें पे-स्लिप नहीं देते, 25-26 तारीख को विभागों में शीट आती हैं जिनमें ओवर टाइम के घण्टे लिखे होते हैं। ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे 700 मजदूरों को पे-स्लिप देते हैं लेकिन उसमें ओवर टाइम नहीं दिखाते, अन्य भत्ते के नाम से पैसे दिखाते हैं। सब मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।

टेम्परेरी और परमानेन्ट मजदूरों की तनखा में खास फर्क नहीं है ऑटोटेक फैक्ट्री में। लेकिन ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे वरकरों को वर्दी नहीं, सवेतन छुट्टी नहीं, कैजुअल छुट्टी नहीं, बोनस नहीं। कम्पनी रोल वाले वरकरों को वर्दी और छुट्टियाँ। इन्हें कम्पनी घाटे में है वाला बोनस, एक महीने की तनखा बोनस में, परन्तु उन्हीं को जो तीन वर्ष से अधिक समय से कम्पनी रोल पर हैं।

ए ए ए ऑटोटेक मैनेजमेन्ट आवश्यकता से अधिक वरकर रखती है। ड्युटी के लिये पहुँचे मजदूरों में से 50-60 को फैक्ट्री से वापस भेजा जाता है। उपस्थित वरकर की अनुपस्थिति लगाते हैं।

कैन्टीन है। तनखा से 450 रुपये काटते हैं। भोजन बहुत खराब।

✶ **मैक्सोप इंजीनियरिंग** (10 सैक्टर-6, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में 300 से ज्यादा मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। सब वरकर ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे हैं। स्टाफ के 50 लोग ही परमानेन्ट होंगे।

भर्ती ज्यादा मजदूर करते हैं। सुबह 7 बजे ड्युटी पहुँचो। साढे सात-आठ बजे फालतु कह कर वापस कर देते हैं — 27 जून को सुबह पाँच-छह हैल्पर और ऑपरेटर फैक्ट्री से वापस भेज दिये। वापस करने पर कम्पनी वरकर को एक पैसा नहीं देती।

प्रेशर डाई कास्टिंग के काम में गर्मी बहुत ज्यादा रहती है। मशीनों पर छोटे-छोटे पँखे हैं, काम के नहीं हैं।

छुट्टी ले कर जाते हैं तब तनखा बैंक खाते में नहीं भेजते। लौटने पर चक्कर कटवा कर चेक देते हैं। छोड़ने अथवा निकालने पर काम किये दिनों के पैसों के लिये बहुत चक्कर कटवाते हैं।

कैन्टीन है। तनखा से 325 रुपये काटते हैं। भोजन बिल्कुल घटिया।

मैक्सोप कम्पनी की तीन फैक्ट्रियाँ आई एम टी मानेसर में हैं और एक-एक फैक्ट्री जयपुर तथा चेन्नई में। वाहन निर्माताओं तथा अन्य को हाई प्रेशर डाई कास्टिंग और ग्रेविटी डाई कास्टिंग द्वारा तैयार पार्ट्स सप्लाई करने के वास्ते विश्व-भर में मैक्सोप के गोदाम हैं।

साझेदारी

✶ आई एम टी मानेसर, उद्योग विहार गुड़गाँव, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, नोएडा, फरीदाबाद में मजदूर समाचार का वितरण हर महीने होता है।

✶ मजदूर समाचार के वितरण के दौरान फुरसत से बातचीत मुश्किल रहती है। इसलिये मिलने-बातचीत के लिये पहले ही सूचना देने का सिलसिला आरम्भ किया है। चाहें तो अपनी बातें लिख कर ला सकते हैं, चाहें तो समय निकाल कर बात कर सकते हैं, चाहें तो दोनों कर सकते हैं।

— मंगलवार, 30 जुलाई को सुबह 6 बजे से साढे नौ तक आई एम टी मानेसर में सैक्टर-3 में बिजली सब-स्टेशन के पास मिलेंगे। खोह गाँव की तरफ से आई एम टी में प्रवेश करते ही यह स्थान है। जे एन एस फैक्ट्री पर कट वाला रोड़ वहाँ गया है।

— उद्योग विहार, गुड़गाँव में फेज -1 में पीर बाबा रोड़ पर वोडाफोन बिल्डिंग के पास सोमवार, 29 जुलाई को सुबह 7 से 10 बजे तक बातचीत के लिये रहेंगे। यह जगह पेड़ के नीचे चाय की दुकान के सामने है।

— बुधवार, 31 जुलाई को सुबह 7 से 10 बजे तक चर्चा के लिये ओखला-सरिता विहार रेलवे क्रॉसिंग (साइडिंग) पर उपलब्ध रहेंगे।

✶ फरीदाबाद में जुलाई में हर रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। बाटा चौक से ऑटोपिन झुग्गियाँ पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी पर हैं।

फोन तथा व्हाट्सएप के लिये नम्बर : 9643246782

ई-मेल

< majdoorsamachartalmel@gmail.com >

और बातें यह भी.... (पेज दो का शेष)

तो उसकी सैलरी 3000 से 5000 रुपये बढा कर लगाई जाती है। और, अगर कोई वरकर आठ-दस साल काम करने के बाद रीजॉइनिंग करता है तो उसकी सैलरी 700 से 800 रुपये कम लगाई जाती है। इस सन्दर्भ में कार्मिक विभाग में बात करो तो वह कहते हैं कि आप नये हो गये हैं।

✶ **आर एस एल एच ऑटो सीट ट्रिम्स** (21 सैक्टर-5, आई एम टी मानेसर) फैक्ट्री में मारुति वाहनों के सीट कवर सुबह 8 से रात पौने नौ बजे की शिफ्ट में 400-500 मजदूर बनाते थे। इधर मारुति में उत्पादन कम होने पर इस फैक्ट्री से दो-ढाई सौ वरकर निकाल दिये हैं। प्रतिदिन 15 मिनट अतिरिक्त काम के बदले महीने में डेढ छुट्टी बन्द कर दी........

छल–कपट

✶जीव प्रजातियों में छल-कपट व्यापक लगता है। सुरक्षा हो अथवा भोजन, अस्तित्व के लिये छल-कपट भी आवश्यक लगता है। व्यवहारिकता छल-कपट का आधार लगती है। सामान्य तौर पर प्रत्येक प्रजाति अन्य जीव प्रजातियों के साथ छल-कपट को स्वाभाविक तौर पर लेती लगती है। इसे सहज, सामान्य छल-कपट कह सकते हैं।

✶मानव प्रजाति भी दीर्घकाल से बढते, फैलते स्तर पर अन्य जीव प्रजातियों के संग सहज, सामान्य छल-कपट में संलग्न रही प्रतीत होती है।

✶सहज, सामान्य छल-कपट पर मनन-मन्थन की आवश्यकता नहीं लगती।

✶परन्तु मानव प्रजाति के अन्दर एक-दूसरे के साथ छल-कपट उभरा, बढा, व्यापक हुआ है। छल-कपट व्यक्ति-व्यक्ति और समूह-समूह स्तरों पर पसरा, व्यापक हुआ। जीव प्रजातियों में यह एक अपवाद लगता है। इसके दुष्परिणाम अत्यन्त दुखद रहे हैं और अब अधिक चिन्तनीय बने हैं। यह मनन-मन्थन का विषय लगता है।

✶छल-कपट के लिये ''पराये-अन्य-दूसरे'' का होना एक अनिवार्यता लगता है। प्रत्येक प्रजाति के लिये दूसरी जीव प्रजातियों में यह पराये प्रकृति में स्वाभाविक तौर पर उपलब्ध रहे हैं। लेकिन एक ही जीव प्रजाति में पराये-अन्य-दूसरे कैसे ?

✶कुछ हजार वर्ष पहले मानव प्रजाति में भिन्न-भिन्न ''अपने'' और कई प्रकार के ''पराये-अन्य-दूसरे'' रचने की प्रक्रिया उत्पन्न हुई। ''अपनों'' को चिन्हित करने के प्रतीक निर्धारित होने लगे। संस्थागत रूप धारण किये। ''अपने-हमारे'' से परे कई प्रकार के ''पराये-अन्य-दूसरे'' चिन्हित किये जाने लगे। चालाक बुद्धि को खाद-पानी दिया जाने लगा।

✶और , ''परायों-दूसरों'' के साथ छल-कपट मान्य, स्वीकार्य।

✶कथाओं में , ग्रन्थों में मेरी-हमारी देवी, मेरे-हमारे देवता, मेरे-हमारे ईश्वर, मेरे-हमारे अल्लाह, मेरे-हमारे गॉड, मेरे-हमारे मसीहा के छल-कपट का गुणगान। और उनकी देवी, उनके देवता, उनके ईश्वर, उनके अल्लाह, उनके गॉड, उनके मसीहा के छल-कपट की भर्त्सना।

✶''अपने-हमारे'' और ''अन्य-पराये-दूसरे'' में जटिल फेरबदल होते आये हैं। एक उदाहरण : 1914 में इंग्लैण्ड का राजा जर्मनी भाषी। 1914-1919 वाले युद्ध में इंग्लैण्ड सरकार और जर्मनी सरकार एक-दूसरे के विरोध में। इंग्लैण्ड का राजपरिवार 1939 में भी जर्मन मूल का। 1939-1945 वाले युद्ध में इंग्लैण्ड सरकार और जर्मनी सरकार एक-दूसरे के विरोध में। इन दो युद्धों के दौरान करोड़ों लोग ''अपने-हमारे'' और ''दूसरे-पराये'' की भिड़न्त में मारे गये थे। और , 1993 में यूरोपियन यूनियन में इंग्लैण्ड सरकार तथा जर्मनी सरकार संग-संग।

✶इन पचास वर्षों के दौरान स्थितियाँ बहुत-ही तेजी से बदली हैं। तीव्रतर गति से बदल रही हैं।

✶ऐसे में अब सामान्य बातचीत में बार-बार सुनने में आ रहा ''अपना कोई नहीं रहा'' एक विलाप के अलावा और कुछ नहीं लगता। और , बदहवास सामाजिक समूहों द्वारा विगत के ''हम-हमारे'' तथा ''दूसरे-पराये'' को खड़ा करने , हवा देने के प्रयास दुख-दर्द बढाने वाले आत्मघात के अलावा और कुछ नहीं लिये लगते।

✶पृथ्वी पर मानव प्रजाति के सात अरब लोग आपस में बहुत गुँथ गये हैं, तेजी से अधिक गुँथते जा रहे हैं। महत्वपूर्ण बात यह लगती है कि इससे मानव प्रजाति में ''अन्य-पराये-दूसरे'' की धारणायें, अवधारणायें असंगत हो गई हैं। पराये कोई नहीं रहे। अपने कोई नहीं रहे — सब अपने हो गये हैं।

✶मानव प्रजाति में प्रचलित सामाजिक प्रक्रिया सामान्य तौर पर वायु , जल, मिट्टी को बढते पैमाने पर प्रदुषित कर पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगा रही है। ऐसे में मानव प्रजाति के अन्दर छल-कपट का बने रहना घातक है। चालाक बुद्धि पर विराम लगाना प्राथमिक आवश्यकता बन गई है।

✶और, अस्तित्व के लिये आवश्यक लगते रहे सहज, सामान्य छल-कपट भी प्रश्नों के घेरों में हैं। प्रभुत्वकारी शक्ति ग्रहण करती आई मानव प्रजाति द्वारा कई प्रजातियों का विनाश और कई प्रजातियों को सिकोड़ते जाना भी पृथ्वी पर जीवन को दाँव पर लगाना लिये लगता है। अन्य जीव प्रजातियों का अस्तित्व मानव प्रजाति के अपने बने रहने के लिये एक अनिवार्य आवश्यकता के तौर पर उभरा है।

व्यवहारिकता की घातकता के दृष्टिगत, जो अव्यवहारिक लगते रहे हैं उन पर मनन-मन्थन आवश्यक बन गया है। बेहतर वर्तमान तथा बेहतर भविष्य के लिय, छल-कपट के आज व्यापक प्रचलन के इस समय में , छल-कपट पर प्रश्न-चिन्ह लगाना अत्यन्त महत्व का लगता है।

केन्द्र सरकार

भारत सरकार के कृषि मन्त्रालय के चार विभागों के मुख्यालय फरीदाबाद में एन एच 4 में हैं। यहीं तीन केन्द्रीय विद्यालय भी हैं।

केन्द्र सरकार के इन संस्थानों में काम करते सफाईकर्मी और सुरक्षाकर्मी ठेकेदार कम्पनियों के जरिये रखे जाते हैं।

केन्द्र सरकार ने 1 अप्रैल 2019 से अकुशल श्रमिक के लिये 15,184 रुपये ; अर्ध-कुशल श्रमिक के लिये 16,770 रुपये ; कुशल श्रमिक के लिये 18,560 रुपये ; और उच्च कुशल श्रमिक के लिये 20,072 रुपये फरीदाबाद जैसे ए-श्रेणी के शहरों के लिये न्यूनतम वेतन निर्धारित किये।

और , फरीदाबाद स्थित केन्द्र सरकार के कृषि मन्त्रालय के विभागों तथा केन्द्रीय विद्यालयों में काम करते सफाई कर्मियों तथा सुरक्षाकर्मियों की अप्रैल तथा मई की तनखायें जुलाई-आरम्भ तक नहीं दी गई थी।

32 हजार

मजदूर समाचार के जून अंक की 32 हजार प्रतियाँ छपी। व्हाट्सएप और ईमेल द्वारा कई अन्य पाठक जुड़े हैं।

जून अंक की 32 हजार प्रतियाँ जो छपी हैं वो पाठकों द्वारा और पाठक निर्मित करने की प्रक्रिया के कारण हैं। पाठक अपनी प्रति के साथ पाँच-दस-बीस-पचास-सौ-पाँच सौ-दो हजार प्रतियाँ ले कर अपने सन्दर्भ और संवाद रच रहे हैं।

सब को निमन्त्रण है।

सम्पर्क के लिये फोन और व्हाट्सएप नम्बर : 9643246782

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए रौनिजा प्रिन्टर्स फरीदाबाद से मुद्रित किया। RN 42233
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।